शेख़ फ़रीद – सबद ११०

फरीदा कंतु रंगावला वडा वेमुहताजु ॥

सलोक, गुरु अर्जन, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८३

फरीदा कंतु रंगावला वडा वेमुहताजु ॥
अलह सेती रतिआ एहु सचावां साजु ॥१०८॥

सार: सच्चा आत्म अपने आप में पूर्ण होता है। यह स्वायत्तता अलगाव का संकेत नहीं देती बल्कि यह एक ऐसी आंतरिक पूर्णता को दर्शाती है जो किसी की स्वीकृति, भौतिक संपत्तियों या बाहरी सहारे पर निर्भर नहीं होती। यह स्वतंत्रता व्यक्ति की अपनी ही गहराइयों से उपजती है, ठीक वैसे ही, जैसे विशाल और गहरा महासागर जिसमें ज्वार-भाटे आते-जाते रहते हैं। यद्यपि लहरें उथल-पुथल भरी हो सकती हैं फिर भी महासागर अपने मूल में शांत बना रहता है। ठीक इसी तरह, एक सच्चा व्यक्ति बाहरी परिस्थितियों से अप्रभावित रहता है और अपनी पूर्णता का संतोष स्वयं अपने भीतर ही पाता है।

फरीदा कंतु रंगावला वडा वेमुहताजु ॥
फ़रीद कहते हैं कि प्रिय की चेतना जीवंत, उच्च और आत्मनिर्भर है। यह सच्चे आत्म की पूर्ण स्वायत्तता की स्थिति को दर्शाता है जो बाहरी प्रभावों पर निर्भर हुए बिना विकसित होती है।

अलह सेती रतिआ एहु सचावां साजु ॥१०८॥
सर्वव्यापी चेतना के साथ एकाकार होना ही सच्चा आभूषण है। यह उस मानसिकता को दर्शाता है जो सहजता से एकता को अपनाती है। (१०८)

तत्त्व: गुरु अर्जन, शेख़ फ़रीद के प्रबल आग्रह से सहमत होते हुए खोज से सामंजस्य की ओर बढ़ने के महत्व पर ज़ोर देते हैं। उनका मानना है कि सच्चा आभूषण बाहरी दिखावे या सामाजिक पहचान

में नहीं बल्कि जो वास्तविक है, उसमें पूरी तरह डूब जाने में है। यह दृष्टिकोण ऐसी मानसिकता को विकसित करता है जो सहज रूप से एकता और परस्पर संबंध को अपनाती है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com